पूज्य श्री लालचंदभाई का प्रवचन
श्री समयसार, गाथा २२०-२२३, ता. ३०-०४-१९८९
सोनागिर, प्रवचन नंबर P २२

क्योंकि चौथे काल में केवलज्ञान होता है।

मुमुक्षु:- साढ़े पाँच करोड़ मुनिराज और ये दो .....

उत्तर:- इस क्षेत्र से गए हैं। बराबर! ये सिद्धक्षेत्र है ना? समश्रेणी ऊपर विराजमान हैं। अपने सिर पर हैं, विराजमान। वो अपने को सबको अपने पास में बुलाते हैं- आओ! आओ! इधर आओ! ये स्थान आपका, तुम्हारा है। (नीचे की तरफ़ इशारा करके) ये स्थान तुम्हारा नहीं है। आहाहा! राग में रहना तुम्हारा स्थान नहीं है। ज्ञान, आनंद में रहना तुम्हारा स्थान है। ज्ञान, आनंद में रहकर टिक जाओ तो जैसे हम हैं, वैसे आपको सिद्ध अवस्था हो जायेगी। बाद में जन्म-मरण होता नहीं। जन्म-मरण सब मिट जाता है, एक दफ़े आत्म-दर्शन हुआ। आहाहा! आत्मा को जानने से संवर होता है। आत्मा को जाने बिना तीन काल में किसी को संवर, निर्जरा नहीं है। आज जाने, कल जाने, आत्मा को जानना संवर है, पर को जानना आश्रव, बंध है। पर को जानने से आश्रव, बंध क्यों होता है? क्योंकि पर को जानने से जाने हुए का श्रद्धान हो जाता है। जिसको जानता है उसको अपना मान लेता है। अकेला जानता नहीं है। मान लेता है। ज्ञानी जानता है, अपने को जानते-जानते पर(परपदार्थ) को, पर(लेकिन) अपना मानता नहीं है।

अज्ञानी के पास अतीन्द्रियज्ञान है नहीं, इन्द्रियज्ञान है, इन्द्रियज्ञान से पर को जानता है, पर में अहम् करता है, ममत्व करता है। मेरा है, मेरा है। आहाहा! राग को जाने तो राग मेरा, देह को जाने तो देह मेरा, मकान को जाने तो मकान मेरा। मेरा-मेरा करता है, मगर आत्मा का कोई परपदार्थ होता नहीं। मेरा, मेरा करता है, तो मरता है। आहाहा! अरे! मेरा तो ज्ञायक, मेरा-मेरा करे तो ज़िंदा रहेगा, नहीं तो मर जाता है। भाव-मरण होता है।

प्रथम आत्मा को जानो, आता है कि नहीं? प्रथम अपने शुद्धात्मा को जानो। आहाहा! ये बात है। भावलिंगी संत दिगंबर मुनिराज ने फ़रमाया है। सब दिगंबर मुनिराज ऐसा कहते हैं। प्रतिमा भी इसे कहते हैं। प्रतिमा की मुद्रा ही ऐसी है। (इधर-उधर देखते हुए) ऐसा-ऐसा नहीं करना।

मुमुक्षु:- पर को जानना तेरा स्वभाव नहीं है।

उत्तर:- नहीं है।

मुमुक्षु:- स्व को जानना तेरा स्वभाव है।

उत्तर:- स्वभाव है! उसका प्रमाण क्या? पर को जानना स्वभाव नहीं और स्व को जानना स्वभाव? तो उसका कोई सबूत होना चाहिए ना, चिन्ह, कि पर को जानने से दुःख होता है और स्व को जानने से आनंद, अतीन्द्रिय आनंद होता है। आहाहा! वो उसका प्रमाण-पत्र है। आहाहा! Certificate. प्रमाण-पत्र। आत्मा को जान तो तेरे को आनंद आयेगा। आत्मा को जानना छोड़ दिया, ऐसा-ऐसा (बाहर) करता है।

ऐसा (अंदर) नहीं करता है। एक दफे ऐसा कर ले। आहाहा!

बाहुबली भगवान को देखकर ऐसा विचार आया। वीर्यवान पुरुष था। आत्मा का वीर्य यानि वीर्य नाम का आत्मा में गुण है। त्रिकाली गुण। जो स्वभाव की रचना करे, वो वीर्यवान है। शुभाशुभभाव की रचना करे, वो नपुंसक है। आहाहा! जिसको मोक्षमार्ग न प्रगट हो, उसका मोक्ष ही नहीं होता है। मोक्षमार्ग भी अंदर, मोक्ष भी अंदर और उसका कारण भी अंदर। कारण भी अंदर और कार्य भी अंदर ही अंदर है। बाहर कुछ है ही नहीं। सब अंदर है। ध्येय भी आत्मा, साधक भी आत्मा, साध्य भी आत्मा। आत्मा ही आत्मा है। आत्मा ही साध्य और आत्मा ही साधक। साध्यरूप भी आत्मा ही परिणमता है और साधकरूप भी आत्मा ही परिणमता है। आहा! उसमें राग-द्वेष है ही नहीं। राग से रहित आत्मा द्रव्य है। उपयोग में तो उपयोग है, उपयोग में तो ज्ञायक है। रागादि तो हैं ही नहीं। हैं ही नहीं तो दिखते ही नहीं।

मुमुक्षु:- और फिर रहते भी नहीं।

उत्तर:- रहते भी नहीं। देखने के लिए भी रहते नहीं। तो व्यवहारनय से देखने के लिए रहेते नहीं!

मुमुक्षु:- हैं नहीं तो देखेगा क्या?

उत्तर:- उपयोग में तो एक है। एक शुद्धात्मा है। वो ही एक ही दिखता है। है ही नहीं उसमें राग, तो दिखेगा कैसे? आहाहा! राग को देखता है, वो आत्मा को नहीं देखता है। अँधा हो गया है। आत्मा को देखता है, वो राग को देखता नहीं है। आहाहा! ऐसी चीज़ है। आत्मा को जानने से संवर होता है। पर को जानने से बंध होता है। आहाहा! पर को जानना बंद हो गया, तो ममत्व छूट गया। जाने तो मेरा माने ना? जाने पर को तो मेरा माने ना? जानता ही नहीं है। आहाहा!

आत्मा का स्वभाव ज्ञान और ज्ञान का स्वभाव आत्मा को जानना। द्रव्य, गुण, पर्याय, उत्पाद, व्यय, ध्रुव सब आ गया। आत्मा का स्वभाव ज्ञान और ज्ञान का स्वभाव आत्मा को जानना। पहला शब्द आया आत्मा, पहला शब्द आया क्या? आत्मा- उसका नाम द्रव्य है। आत्मा, पहला द्रव्य हो गया। आत्मा का स्वभाव ज्ञान है, तो ज्ञान गुण आ गया। ज्ञान गुण त्रिकाली। और ज्ञान का स्वभाव आत्मा को जानना। आत्मा का स्वभाव ज्ञान, वो गुण है, और ज्ञान का स्वभाव आत्मा को जानना, वो पर्याय है। आहाहा!

मुमुक्षु:- द्रव्य, गुण, पर्याय तीनों आ गया।

उत्तर:- आत्मा है, है और है तो उसका कोई स्वभाव होना चाहिए। आत्मा त्रिकाली तो उसका स्वभाव भी त्रिकाली। ज्ञान गुण त्रिकाली है, परमपारिणामिकभाव परिपूर्ण ज्ञान। आहाहा! गुण है। आत्मा का स्वभाव ज्ञान, वो गुण है। आत्मा का लक्षण ज्ञान है और ज्ञान का लक्षण आत्मा को जानना है। क्या कहा?

मुमुक्षु:- आत्मा का स्वभाव ज्ञान है और ज्ञान का लक्षण आत्मा को जानना है।

उत्तर:- आत्मा का स्वभाव ज्ञान है, वो गुण है। ये सामान्य का विशेष है। ये सामान्य का विशेष है। जब ज्ञान सामान्य होता है, तो उसका विशेष अतीन्द्रियज्ञान की पर्याय होती है। जब द्रव्य को सामान्य कहें, तो उसका विशेष क्या? गुण। ज्ञान गुण उसका विशेष। बस इतना ही। अभी जो ज्ञान है, उसको सामान्य लो, तो उसका विशेष आत्मा को जाने, ऐसी ज्ञान की पर्याय वो ज्ञान का विशेष है। आहाहा!

मुमुक्षु:- आत्मा का विशेष ज्ञान गुण, ज्ञान का विशेष आत्मा को जानना।

उत्तर:- जानना। द्रव्य, गुण, पर्याय तीनों आ गया। बीच में कोई जगह पर आत्मा में राग नहीं है,

गुण में राग नहीं है, आत्मा को जाननेवाली ज्ञान की पर्याय में राग नहीं है। आदि, मध्य, अंत में द्रव्य, गुण, पर्याय में राग है ही नहीं। द्रव्य में नहीं, गुण में नहीं और पर्याय में भी नहीं। राग नहीं है। राग की जो पर्याय है, वो अन्य द्रव्य की है। उसका लक्षण जुदा है। चेतन लक्षण उसमें नहीं है। आहाहा!

मुमुक्षु:- फिर कहाँ से खड़ा हो गया?

उत्तर:- मैं आत्मा हूँ- ऐसा नहीं जाना। देह मेरा है, ऐसा जाना। यहाँ से खड़ा हो गया अंदर। कहाँ से जाना जाये? देह को आत्मा जाना, माना और शुभभाव की क्रिया से धर्म माना, तो ज्ञान प्रगट ही नहीं होता।

मुमुक्षु:- स्वयंकृत।

उत्तर:- स्वयंकृत। अज्ञान स्वयंकृत है। अपने को आप भूलकर हैरान हो गया।

मुमुक्षु:- आदि, मध्य, अंत तीनों द्रव्य ही है।

उत्तर:- द्रव्य ही है। द्रव्य है और द्रव्य को प्रसिद्ध करनेवाली जाति, द्रव्य की जाति की पर्याय प्रगट होती है, अतीन्द्रिय। द्रव्य अतीन्द्रिय ज्ञानमय है। उसमें इन्द्रियज्ञान नहीं है। और अतीन्द्रियज्ञान का पिंड है और आनंद का पिंड है। तो उसको प्रसिद्ध करनेवाली उसकी जाति की पर्याय परिणमती है, प्रगट होती है। वो आत्मा को प्रसिद्ध करती है। यानि आत्मा का अनुभव होता है। आत्मा का दर्शन होता है। इन्द्रियज्ञान में दर्शन नहीं होता है। राग में दर्शन करने की बात है ही नहीं।

हाँ! एक है, मानसिकज्ञान में परोक्ष दर्शन होता है। जब सम्यग्दर्शन का काल पका, किसी जीव को समझो! मर्यादा में आ गया। छह महीने की मर्यादा में आ गया। तो उसको मानसिकज्ञान के द्वारा निर्णय के काल में परोक्ष अनुभूति होती है। और बाद में प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। इतना मन काम करता है। वहाँ तक ले जाता है।

मुमुक्षु:- मन को अंदर को छूता चला आता है, बाहर में जो फैला था वो अंदर में।

उत्तर:- अंदर में अपना जो जाननेवाला ही जानने में आता हैं (जाणनारो जणाय छे), ज्ञायक जानने में आता है, ऐसा आता है, तो परोक्ष अनुभूति होती है। निर्णय के काल में कोई अपूर्व-निर्णय आता है। साधारण निर्णय नहीं। धारणा की बात तो है ही नहीं। ऊपर-ऊपर के निर्णय की बात है नहीं और निर्णय को आगे करता है, उसको निर्णय ही नहीं है। आत्मा को आगे रखता है, तो निर्णय है।

मुमुक्षु:- निर्णय को आगे रखता है।

उत्तर:- हाँ! निर्णय को आगे नहीं करना। निर्णय का विषय आगे होना चाहिए। निर्णय आगे नहीं करना। निर्णय का जो विषय शुद्धात्मा, उसको आगे करना है।

आओ साहब! आओ इधर आओ! आगे, आओ आप तो वृद्ध हैं ना? मंत्री साहब है, शिवलालजी पाटनी जी। इधर आओ! मेरे पास आओ। नहीं सुनने में ठीक पड़ेगा। हमारे पास आओ।

आत्मा का स्वभाव ज्ञान और ज्ञान का स्वभाव आत्मा को जानना। शक्कर पदार्थ है। शक्कर नाम का पदार्थ है। उसका स्वभाव मीठापना है, वो गुण है। वो मीठापने की जो अवस्था होती है उसका स्वाद आता है, मीठा। पर्याय का स्वाद मीठा आता है, क्योंकि उसमें गुण मीठा है। सारा द्रव्य मीठा ही है। खारा नहीं, कड़वा नहीं, कुछ स्वाद आता नहीं है। शक्कर को रखो इधर (मुँह की तरफ़)। तो शक्कर द्रव्य है,

उसका मिठास गुण है और गुण का वेदन नहीं आता है, द्रव्य का वेदन नहीं आता है, पर उसकी पर्याय प्रगट होती है मिठास, खटास नहीं, खट्टा नहीं, कड़वा नहीं। जैसा द्रव्य-गुण है, वैसा उसका परिणाम है... जो उसकी पर्याय कही जाती है। कड़वी पर्याय हो और शक्कर मीठी हो, ऐसा है नहीं। शक्कर मीठी हो तो उसका गुण मीठा और परिणाम भी मीठा। तो जब वेदन आता है, परिणाम मीठा का स्वाद आता है। मिठास का स्वाद। मिठास कहते हैं ना?

मुमुक्षुः- हाँ! मीठा-मीठा मिश्री ही है।

उत्तरः- मीठा का स्वाद आया, तो ऐसा भान हो गया कि उसका गुण और द्रव्य मिठाई से भरा है। कड़वे की कोई जगह नहीं, कोई क्षेत्र में, शक्कर का कोई क्षेत्र में कड़वास नहीं है, खटास नहीं है, तिखास नहीं है। सारे क्षेत्र में शक्कर का है। शक्कर का सारा क्षेत्र, क्षेत्र समझे ना? प्रदेश। जितने भाग में पदार्थ रहता है, उसका नाम क्षेत्र कहा जाता है। जितने भाग में द्रव्य, गुण, पर्याय रहता है, उसका क्षेत्र। तो पर्याय के द्वारा अनुभव के द्वारा ख्याल आता है, शक्कर का। ऐसे मीठा, मधुर, ज्ञान और आनंद की मूर्ती आत्मा है। वो आनंदमयी है ऐसा कैसे ख्याल में आवे कि.....

ॐ